अमरकांत

अमरकांत (1 जुलाई 1925-17 फरवरी 2014) हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कहानीकार थे। अमरकांत का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगराकस्बे के पास स्थित भगमल पुर गाँव में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. किया। इसके बाद उन्होंने साहित्यिक सृजन का मार्ग चुना। बलिया में पढ़ते समय उनका सम्पर्क स्वतन्त्रता आंदोलन के सेनानियों से हुआ। सन् 1942 में वे स्वतन्त्रता-आंदोलन से जुड़ गए। शुरुआती दिनों में अमरकांत तरतम में ग़ज़ले और लोकगीत भी गाते थे। उनके साहित्य जीवन का आरंभ एक पत्रकार के रुप में हुआ। उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। वे बहुत अच्छी कहानियाँ लिखने के बावजूद एक अर्से तक हाशिये पर पड़े रहे। उस समय तक कहानी-चर्चा के केन्द्र में मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव की त्रयी थी। कहानीकार के रूप में उनकी ख्याति सन् 1955 में 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी से हुई।

अमरकांत के स्वभाव के संबंध में रवीन्द्र कालिया लिखते हैं-''वे अत्यन्त संकोची व्यक्ति हैं। अपना हक माँगने में भी संकोच कर जाते हैं। उनकी प्रारम्भिक पुस्तकें उनके दोस्तों ने ही प्रकाशित की थीं।....एक बार बेकारी के दिनों में उन्हें पैसे की सख्त जरूरत थी, पत्नी मरणासन्न पड़ी थीं। ऐसी विषम परिस्थिति में प्रकाशक से ही सहायता की अपेक्षा की जा सकती थी। बच्चे छोटे थे। अमरकांत ने अत्यन्त संकोच, मजबूरी और असमर्थता में मित्र प्रकाशक से रॉयल्टी के कुछ रुपये मांगे, मगर उन्हें दो टूक जवाब मिल गया, 'पैसे नहीं है।' अमरकांतजी ने सब कर लिया और एक बेसहारा मनुष्य जितनी मुसीबतें झेल सकता था, चुपचाप झेल लीं। सन् 1954 में अमरकांत को हृदय रोग हो गया था। तब से वह एक जबरदस्त अनुशासन में जीने लगे। अपनी लड़खड़ाती हुई जिन्दगी में अनियमितता नहीं आने दी। भरसक कोशिश की, तनाव से मुक्त

रहें। जवाहरलाल नेहरु उनके प्रेरणास्रोत रहे हैं। वे मानते थे कि नेहरू जी कई अर्थों में गांधीजी के पूरक थे और पंडित नेहरु के प्रभाव के कारण ही कांग्रेस संगठन प्राचीनता और पुनरुत्थान आदि कई प्रवृत्तियों से बच सका। 17 फरवरी 2014 को उनका इलाहाबाद में निधन हो गया।

रचनाएँ

कहानी संग्रह

1. 'जिंदगी और जोंक', 2. 'देश के लोग', 3. 'मौत का नगर', 4. मित्र मिलन तथा अन्य कहानियाँ, 5. 'कुहासा', 6. 'तूफान', 7. 'कला प्रेमी', 8. 'प्रतिनिधि कहानियाँ', 9. 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ', 10. 'एक धनी व्यक्ति का बयान', 11. 'सुख और दु:ख के साथ', 12. 'जांच और बच्चे', 13. 'अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ' (दो खंडों में), 14. 'औरत का क्रोध'।

उपन्यास

1. 'सूखा पत्ता', 2. 'काले-उजले दिन', 3. 'कंटीली रह के फूल', 4. 'ग्राम सेविका', 5. 'पराई डाल का पंछी' बाद में 'सुखजीवी' नाम से प्रकाशित, 6. 'बीच की दीवार', 7. 'सुन्नर पांड़े की पतोह', 8. 'आकाश पक्षी', 9. 'इन्हीं हथियारों से', 10. 'विदा की रात', 11. लहरें।

संस्मरण

1. कुछ यादें, कुछ बातें, 2. दोस्ती।

बाल साहित्य

1. 'नेऊर भाई'4, 2. 'वानर सेना', 3. 'खूँटा में दाल है', 4. 'सुग्गी चाची का गाँव', 5. 'झगरु लाल का फैसला', 6. 'एक स्त्री का सफर', 7. 'मँगरी', 8. 'बाबू का फैसला', 9. दो हिम्मती बच्चे।

उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की पक्षधरता का चित्रण मिलता है। वे भाषा की सृजनात्मकता के प्रति सचेत थे। उन्होंने काशीनाथ सिंह से कहा था-''बाबू साब, आप लोग साहित्य में किस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं? भाषा, साहित्य और समाज के प्रति आपका क्या कोई दायित्व नहीं? अगर आप लेखक कहलाए जाना चाहते हैं तो कृपा करके सृजनशील भाषा का ही प्रयोग करें।'' अपनी रचनाओं में अमरकांत व्यंग्य का खूब प्रयोग करते हैं। 'आत्म कथ्य' में वे लिखते हैं-''उन दिनों वह मच्छर रोड स्थित' मच्छर भवन' में रहता था। सड़क और मकान का यह नूतन और मौलिक नामकरण उसकी एक बहन की शादी के निमन्त्रण पत्र पर छपा था। कह नहीं कह सकता कि उसका मुख्य उद्देश्य तत्कालीन मुनिसिपैलिटी पर व्यंग्य करना था अथवा रिश्तेदारों को मच्छरदानी के

Scanned by CamScanner

साथ आने का निमंत्रण।' उनकी कहानियों में उपमा के भी अनूठे प्रयोग मिलते हैं, जैसे, 'वह लंगर की तरह कूद पड़ता', 'बहस में वह इस तरह भाग लेने लगा, जैसे भादों की अँधेरी रात में कुत्ते भौंकते हैं', 'उसने कौए की भाँति सिर घुमाकर शंका से दोनों ओर देखा। आकाश एक स्वच्छ नीले तंबू की तरह तना था। लक्ष्मी का मुँह हमेशा एक कुल्हड़ की तरह फूला रहता है। दिलीप का प्यार फागुन के अधड़ की तरह बह रहा था आदि-आदि।

रचनात्मकता की दृष्टि से अमरकांत को गोर्की के समकक्ष बताते हुए यशपाल ने लिखा था-"क्या केवल आयु कम होने या हिन्दी में प्रकाशित होने के कारण ही अमरकांत गोर्की की तुलना में कम संगत मान लिए जायें। जब मैंने अमरकान्त को गोर्की कहा था, उस समय मेरी स्मृति में गोर्की की कहानी 'शरद की रात' थी। उस कहानी ने एक साधनहीन व्यक्ति को परिस्थितियाँ और उन्हें पैदा करने वाले कारणों के प्रति जिस आक्रोश का अनुभव मुझे दिया था, उसके मिलते-जुलते रूप मुझे अमरकांत की कहानियों में दिखाई दिये।

उनकी रचनाओं के लिए उन्हें सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश संस्थान की ओर से भी उन्हें पुरस्कार प्रदान किया गया था।

कहानी का परिचय

अमरकांत ने अपनी कहानी 'दोपहर का भोजन' में निम्न मध्यमवर्गीय जीवन को उकेरा है। इस परिवार में पाँच लोग है मुंशी चन्द्रिका प्रसाद, पत्नी सिद्धेश्वरी पुत्र रामचन्द्र, मोहन और 6 साल का बेटा प्रमोद। इस कहानी में लेखक ने आर्थिक जहालत का बहुत ही सुंदर और मार्मिक चित्र उकेरा है। मुंशी चंद्रिका प्रसाद की नौकरी चली गयी है वे दिन रात मेहनत करके नई नौकरी की तलाश में लगे हुए हैं। आर्थिक विपन्नता की स्थिति ने मुंशी चन्द्रिका प्रसाद और पत्नी सिद्धेश्वरी देवी को वक्त से पहले बूढ़ा बना दिया है। बड़ा बेटा राम चंद्र 12 पास है वह इक्कीस वर्ष का हो चुका है और वह एक स्थानीय दैनिक समाचार पत्र के दफ्तर में प्रूफ रीडरी का काम सीख रहा है। आर्थिक विपन्नता उसके भी शरीर पर झलक रही है। बिचला लड़का मोहन जिसकी उम्र अठ्ठारह वर्ष है वह हाईस्कूल का प्राइवेट इम्तहान देने की तैयारी कर रहा है और सबसे छोटा बेटा जो छः वर्ष का है। इन सभी सदस्यों को देखकर ही पता चलता है कि ये सभी आर्थिक तंगी को किस प्रकार से झेल रहे हैं। घर की हालत तथा रसोई की हालत ही आर्थिक विपन्नता को दर्शा देती है। लेकिन लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि भूखे होने के कारण भी एक दूसरे के प्रति इनका प्रेम कायम है भूखे होने पर भी वे एक दूसरे के लिए त्याग करते हैं। पूरी कहानी रसोई की रोटी के इर्द गिर्द घूमती है। अपनी अपनी भूख को परिवार का हर सदस्य इतनी चालाकी से छिपाता है कि कहानी में रोचकता बनी रहती है।

लेखक अमरकांत ने कहानी के पूरे घटनाक्रम को बहुत ही सीधे और सपाट तरीके से बयान किया है पूरी कहानी का केन्द्र बिन्दू दोपहर के भोजन के इर्द गिर्द ही घूमता है। दोपहर के भोजन के लिए एक एक सदस्य आते हैं। उनके भावों को देखकर ऐसा लगता है कि उनके मन में अपराध बोध हो। वे एक एक निवाला इस प्रकार से निगलते हैं कि जैसे कोई अपराध कर रहे हो दूसरे से अपने भाव को छुपाने का प्रयास करते है तथा बड़े ही नाटकीय ढंग से वे अपनी भूख समाप्त हो जाने का नाटक करते है और एक दूसरे के लिए त्याग की भावना रखते एक दूसरे को अपनी रोटी देने का प्रयास करते हैं। हर सदस्य अपने अपने नाटकीय अंदाज को बखूबी निभाते है। जैसे-रामचन्द्र की थाली में जब रोटी का एक टुकड़ा बचा तो सिद्धेश्वरी ने उठने का प्रयास करते हुए कहा

Scanned by CamScanner

कि एक रोटी और लाती हूँ। तब रामचन्द्र ने कहा नहीं मेरा पेट भर चुका है और मैं तो यह भी छोड़ने वाला हूं।

इस कहानी के हर पात्र में जीने की ईच्छा है। वे किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानते और जीने की ईच्छा रखते हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी सिद्धेश्वरी हार नहीं मानती है और परिवार को जोड़े रखने का भरपूर प्रयास करती है परिवार टूटे न इसके लिए वह झूठ का भी सहारा लेती है और एक दूसरे से उनकी तारीफ भी करती है जब रामचंद्र मोहन के बारे में पूछता है तो सिद्धेश्वरी कहती है कि वह किसी लड़के के यहां पढ़ने गया है जब वह प्रमोद के बारे में पूछता है तब भी वह यही कहती है कि आज तो वह बिल्कुल नहीं रोया और कहता है कि बड़का भैया के यहाँ जाऊँगा। परिवार की डोर कहीं कमजोर न पड़ जाये इसके लिए सिद्धेश्वरी भरसक प्रयास करती है और एक दूसरे की तारीफ एक दूसरे के सामने करती है जब मुंशी जी बड़कऊ के बारे में पूछते हैं तो सिद्धेश्वरी को कुछ समझ नहीं आता और वह कहती है कि हमेशा बाबूजी बाबू किए रहता है बोलता है बाबू जी देवता के समान हैं यहां तक कि मोहन उसकी बड़ी इज्जत करता है।

परिवार को बचाने का कार्य सिर्फ सिद्धेश्वरी ही नहीं करती है बल्कि परिवार का हर सदस्य करता है जिसको लेखक ने बहुत ही बारीकी से दिखाया है। हर सदस्य एक दूसरे की खुशी के लिए झूठ बोलते है पेट न भरा हाने पर भी बहुत ही नाटकीय ढंग से पेट भरा होने का इजहार करते हैं। चाहे वह रामचंद्र हो चाहे मोहान, चाहे मुंशी जी या खुद सिद्धेश्वरी कोई एक दूसरे को गरीबी का एहसास नहीं होने देते। भोजन कम होने के बाद भी सिद्धेश्वरी इस तरह से नाटक करती है कि रसोई में बहुत भोजन है रोटी की कोई कमी नहीं है वह रामचंद्र से जिद् करके कहती है कि आधी ही रोटी ले ले। लेकिन रामचंद्र अपनी मां से इतनी सफाई से झूठ बोलते हुए कहता है कि अधिक खिलाकर मुझे बीमार करने की तबीयत है क्या भूख होती तो क्या ले नहीं लेता। वो इस प्रकार से बोलता है कि मां का दिल भी न दुखे और दूसरे के लिए रोटी बची रह जाए। जब मोहन खाने आता है तो वह उससे भी जिद्द करती है कि एक रोटी देती हूं। लेकिन मोहन रसोई की सच्चाई को जानता था उसने माँ को गौर से देखा और कहा तूने ऐसी रोटियां बनाई है कि खाई नहीं जाती। उसी प्रकार से जब मुंशी चंद्रिका प्रसाद आते हैं और वो थाली के बचे खाने को बंदर की तरह बीन कर खाते हैं तब सिद्धेश्वरी कहती है कि बड़का की कसम एक रोटी और देती हूं अभी बहुत सी है। तब मुंशी जी अपराधी भाव से रसोई की ओर

देखकर कहते हैं कि पेट काफी भर गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि परिवार का हर सदस्य अपने अपने धर्म को निभाने में पीछे नहीं हटता है। हर सदस्य यह कोशिश करता है कि गरीबी का ताप किसी सदस्य तक न पहुंचे।

लेखक ने गरीबी के ऐसे वातावरण का निर्माण किया है जो पाठक को अंदर तक छू जाता है। पानी जो कि प्यास बुझाता है लेकिन जब खाली पेट पानी पिया जाता है तो कितना दुखदाई होता है इसका बहुत ही सुंदर चित्रण लेखक ने सिद्धेश्वरी के माध्यम से व्यक्त किया है जब वह पानी पीने लगी तो खाली पानी उसके कलेजे में लग गया और वह हाय राम कहकर वहीं जमीन पर लेट गई। यह चित्रण लेखक का कल्पना मात्र नहीं है बल्कि यह सच है कि अमृत कहा जाने वाला पानी जब खाली पेट गले में उतरता है तो वह बहुत ही दुखदायी होता है। घर का एक-एक वातावरण और व्यक्ति की हालत वहाँ की गरीबी को दर्शाता है सिद्धेश्वरी का छह वर्षीय लड़का प्रमोद "नंग धडंग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियां साफ दिखाई दे रही थी। उसके हाथ, पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान से पड़े थे और उसका पेट हँडिया की तरह फूला हुआ था। उसका मुख खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियां उठ रही थी।"

गरीबी के कारण व्यक्ति किस प्रकार से कम उम्र में ही अधिक उम्र का लगने लगता है इसका बहुत ही सुंदर चित्रण लेखक ने मुंशी चंद्रिका प्रसाद के माध्यम से किया है। लेखक ने बताया है कि "उनकी उम्र पैंताली वर्ष के लगभग थी, किंतु पचास पचपन के लगते थे। शरीर का चमड़ा झूलने लगा था, गंजी खोपड़ी आईने की भांति चमक रही थी। गंदी धोती के ऊपर अपेक्षाकृत कुछ साफ बनियान तार-तार लटक रही थी।" लेखक ने सुंदर प्रतीक के माध्यम से गरीबी को इस तरह से चित्रित किया है कि वह सीधा जाकर पाठक को झकझोड़ता है। घर की एक एक हालत उसकी गरीबी को दर्शाता है।

माँ किस प्रकार से घर के सारे दु:ख को अपने आंचल में समेट लेती है। खुद भूखी रहती है और अपने बच्चों का पेट भरती है सिद्धेश्वरी के माध्यम से लेखक ने बहुत ही मार्मिक अभिव्यक्ति की है। "मुंशी जी के निबटने के पश्चात सिद्धेश्वरी उनकी जूठी थाली लेकर चौके की जमीन पर बैठ गई। बटलोई की दाल को कटोरे में उड़ेल दिया पर वह पूरा भरा नही। छिपुली में थोड़ी-सी चने की तरकारी बची हुई थी, उसे पास खींच लिया। रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया। उसमें केवल एक रोटी बची थी। मोटी-भद्दी और जली उस रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसरे

Scanned by CamScanner

में सोये प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया। उसने लड़के को कुछ देर तक एक टक देखा, फिर रोटी को बराबर दो टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जूठी थाली में रख लिया। तदुपरांत एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गई। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आखों से टप-टप आँसू चूने लगें।"

कहानी की खूबी इस बात में है कि कोई भी पात्र गरीबी के कारण झुंझलाता नहीं है अपनी किस्मत को नहीं कोसता और न ही एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते हैं। बल्कि शान्त और मौन भाव से एक दूसरे का साथ देते है और विपरीत परिस्थितियों में भी एक दूसरे का हौसला बढ़ाते है।

इस कहानी में लेखक ने सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया है। कहीं भी कोई ऐसे शब्द नहीं है जो पाठक की समझ में ना आये। चलती हुई तथा प्रान्तीय भाषा का प्रयोग है। आसान प्रतीकों का प्रयोग किया है। जैसे हाथ पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे थे, पेट हँडिया की तरह फूला हुआ था, पनियाई दाल, तली तरकारी, खड़खड़िया, पंखा डुलाना, शरीर का चमड़ा झूलने लगा, गंजी खोपड़ी आइने की भाँति चमक रही थी आदि। भाषा कहीं पर दुरुह नहीं है। वह पाठक को बांधे हुए है कहानी कहीं टूटने नहीं पाती। वह पाठक के अंदर रोचकता पैदा करती है तथा कहानी को आगे ले जाती है।

Scanned by CamScanner